दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/18(JS)–HL-**HL1**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Devendra Prakash

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ [ ] नहीं [ ]

मोबाइल नं. (Mobile No.): _____

ई-मेल पता (E-mail address): _____

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 19/06/18

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

[ ][ ][ ][ ][ ][ ][ ]

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): D Meena

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): _____ टिप्पणी (Remarks): _____

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

मूल्यांकन की पद्धति

प्रिय अभ्यर्थियों,

आपकी उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते हुए परीक्षक-समूह के सदस्य निम्नलिखित निर्देशों का ध्यान रखते हैं। आप भी इन्हें ध्यान से पढ़ें ताकि आप अपने प्राप्तांकों का तार्किक कारण समझ सकें।

परीक्षकों के लिये निर्देश

1. मूल्यांकन में अंकों का वही स्तर रखा जाना चाहिये जैसा संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) के परीक्षकों द्वारा रखा जाता है।
2. सामान्य अध्ययन का जो उत्तर हर दृष्टिकोण से सटीक व उत्कृष्ट है; उसे अधिकतम 60% अंक दिये जाने चाहियें क्योंकि आयोग द्वारा किये जाने वाले मूल्यांकन में भी इससे अधिक अंक मिलना लगभग असंभव है। वैकल्पिक विषयों के उत्कृष्ट उत्तरों तथा श्रेष्ठतम निबंधों में अधिकतम 70% तक अंक दिये जा सकते हैं।
3. कृपया अंकों का वितरण निम्नलिखित तालिका के अनुसार करें-

उत्तर का स्तर (Standards of Answer)	सामान्य अध्ययन में अंक-स्तर (Marks Standard G.S.)	वैकल्पिक विषय तथा निबंध में अंक-स्तर (Marks Standard - Optional Subject and Essay)
उत्कृष्ट (Excellent)	51-60%	61-70%
बहुत अच्छा (Very Good)	41-50%	51-60%
अच्छा (Good)	31-40%	41-50%
औसत (Average)	21-30%	31-40%
कमजोर (Poor)	0-20%	0-30%

4. कृपया उत्तर में निम्नलिखित गुणों को विशेष प्रोत्साहन दें-
   - प्रश्न की सटीक समझ व उत्तर की व्यवस्थित रूपरेखा
   - संक्षिप्त, टू-द-पॉइंट लेखन शैली
   - प्रामाणिक तथ्यों का समुचित उपयोग
   - अधिकतम ज़रूरी बिंदुओं का समावेश
   - सरकारी दस्तावेज़ों (मंत्रालयों/आयोगों की रिपोर्ट्स, पॉलिसी पेपर्स आदि) के संदर्भों की चर्चा
   - प्रभावी भूमिका व निष्कर्ष
   - समकालीन घटनाओं/प्रसंगों को उत्तर से जोड़ना
   - दृष्टिकोण में संतुलन, समावेशन व गहराई
   - अच्छी, साफ-सुथरी हैंडराइटिंग
   - भाषा में प्रवाह
   - आवश्यकतानुसार डायग्राम्स, नक्शों आदि का प्रयोग
   - तकनीकी शब्दावली का सटीक उपयोग
   - सुंदर प्रस्तुति शैली (छोटे पैराग्राफ्स रखना, महत्त्वपूर्ण शब्दों को अंडरलाइन करना आदि)
   - विराम चिह्नों का समुचित प्रयोग
   - भाषा में वर्तनी व व्याकरण की शुद्धता
5. टॉपर्स के अनुभव बताते हैं कि उत्तर की विषयवस्तु अच्छी होने पर आयोग के परीक्षक शब्द-सीमा के थोड़े बहुत उल्लंघन पर अंक नहीं काटते हैं। कृपया आप भी इसी दृष्टिकोण के अनुसार अंक-निर्धारण करें।

Method of Evaluation

Dear Candidates,

While assessing your answer-scripts, the evaluators are required to follow the given instructions. You should also read them carefully to understand the logic behind the marks obtained by you in the tests.

Instructions for the Evaluators

1. The level of marks while evaluating the answers should be kept as per UPSC (Union Public Service Commission) standards as far as possible.
2. The answers of General Studies which are accurate and excellent from every perspective should be awarded a maximum of 60% marks as it is almost impossible to get more than that in actual UPSC examination. Excellent answers in optional subjects and the best written essays can be awarded a maximum of 70% marks.
3. Please assign the marks according to the following table-

4. Please devote special attention to the following qualities in an answer–
   - Accurate understanding of the question and systematic presentation of the answer
   - Crisp and to the point writing style
   - Adequate use of authentic facts
   - Inclusion of all the important points
   - Citing of relevant facts and figures from relevant official documents (Ministries /Commissions Reports, Policy Papers etc.)
   - Effective introduction and conclusion
   - Linking of current events and situations with the answer
   - Balance and depth in answer-writing
   - Legible and clean handwriting
   - Flow of language
   - Use of diagrams, maps etc
   - Precise use of technical terminology
   - Beautiful presentation style (small paragraphs, underlining important words etc.)
   - Proper use of punctuations
   - Correct spellings and right use of grammar
5. Experience of UPSC toppers also indicates that if the content of the answer is good, the UPSC examiners do not cut the marks on slight violations of the word-limit. Please award marks strictly according to the above-mentioned instructions.

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

SECTION 'A'

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: $10 \times 5 = 50$

(क) 'कन्नौजी' बोली का परिचय

'कन्नौजी' बोली पश्चिमी हिन्दी उपभाषा की एक महत्वपूर्ण बोली है। प्राचीन तथा मध्यकालीन कन्नौज क्षेत्र से संबंधित होने के कारण इसका नाम 'कन्नौजी' पड़ा।

पश्चिमी हिन्दी की अन्य बोलियों ब्रजभाषा, हरियाणी आदि से इसकी निकटता भाषा वैज्ञानिकों ने स्वीकार की है।

कन्नौजी की विशेषताएँ :-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) प्रारंभिक खड़ी बोली और खुसरो की कविता

खुसरो खड़ीबोली हिन्दी के पहले कवि माने जाते है। उनकी कविताओं में खड़ीबोली का जो स्वरूप दिखाई देता है, वह आश्चर्यजनक रूप से वर्तमान मानक हिन्दी के लगभग समरूप दिखाई देता है।

खुसरो की कविताओं में खड़ी बोली के शब्दों का स्पष्टतः प्रयोग हुआ है। द्रष्टव्य है -

" एक थाल मोती से भरा, सबके सिर ~~पर~~ औंधा धरा।
चारों ओर वह थाल फिरे, मोती उससे एक न गिरे।।"

उपर्युक्त खड़ी बोली में कारक चिन्हों का प्रयोग वर्तमान मानक हिन्दी के समान है।

खुसरों ने सूफी प्रेमाश्रयी संतों की रहस्यवादी सिद्धांतों को भी खड़ी बोली हिन्दी में प्रस्तुत किया जो साम्प्रदायिक सौहार्द्र की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।

इसके अतिरिक्त खुसरों की मुकरियाँ खड़ी बोली हिन्दी तथा ब्रजभाषा का उचित समन्वय दर्शाती है। कहीं-कहीं तो खुसरों ने ~~[illegible]~~

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

फारसी शब्दों को भी खड़ी बोली तथा ब्रजभाषा के साथ उपयोग किया है। उदाहरण के लिए-

"मेरा मोसे सिंगार करावत, आगे बैठ के मान बढ़ावत, वासे चिक्कन ना कोई दीसा, ऐ सखि साजन! ना सखि सीसा।"

खुसरो की ~~की~~ कविताओं में परिपक्व खड़ी बोली के उपयोग को देखते हुये शुक्ल जी को भी कहना पड़ा -

"क्या उस समय तक भाषा घिसकर इतनी चिकनी हो गई थी, जितनी खुसरो की पहेलियो में दिखाई पड़ती है।"

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि खुसरो की कविताएँ प्रारंभिक ~~हिन्दी के~~ खड़ी बोली के परिपक्व प्रयोग को दर्शाती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

पया इस स्थान में प्रश्न
ख्या के अतिरिक्त कुछ
लिखें।
lease do not write
ything except the
estion number in
is space)

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।
(Please don't write
anything in this space)

(ग) 'भोजपुरी' बोली का परिचय

बिहारी हिन्दी की 3 बोली के रूप में भोजपुरी बिहार के अतिरिक्त पूर्वी उत्तरप्रदेश में भी बोली जाती है। भोजपुरी भारत की सर्वाधिक बोली जाने वाली 'बोली' है, जो भारत के बाहर भी फिजी, मॉरीशस आदि देशों में बोली जाती है।

'भोजपुरी' हिन्दी की विशेषताएँ :-

→ 'ऐ' तथा 'औ' के स्थान पर क्रमशः 'अइ' तथा 'अउ' का प्रयोग किया जाता है। यथा-

औरत > अउरत

→ 'ड़' का 'र' तथा 'ण' का 'न' में रूपान्तरण इस बोली की प्रमुख विशेषता है, जो इसे अवधी के निकट लाती है।

साड़ी > सारी

कौण > कौन

→ संज्ञा के तीन रूप मिलते है, जो 'अवधी' में भी दिखाई देते है। उदाहरण के लिए-

० - लरिका, लरकवा, लरकउना।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सर्वनाम :- भोजपुरी में मानक हिन्दी के कुछ सर्वनामों के साथ अपने क्षेत्रीय सर्वनामों का भी प्रयोग होता है।

प्रथम पुरुष → में, माहि, हम

मध्यम पुरुष → तुहार, तुम, ताहि

उत्तम पुरुष → वह, ओकरा

→ क्रिया → क्रिया के विभिन्न रूप प्रयुक्त हैं। जैसे-

'ल' रूप → भूतकाल के लिए (देखल, सूतल)

'त' रूप → वर्तमानकाल (चलत, सुनत)

'ब' रूप → भविष्यकाल (चलब, खाब)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

या इस स्थान में प्रश्न
या के अतिरिक्त कुछ
लिखें।

ease do not write
thing except the
estion number in
s space)

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।
(Please don't write
anything in this space)

(घ) हिंदी भाषा का क्षेत्र

हिन्दी भाषा क्षेत्र के रूप में उस क्षेत्र को जाना जाता है जहाँ हिन्दी प्रथम भाषा के रूप में उपस्थित हो ~~अथवा~~ अथवा हिन्दी सम्पर्क भाषा के रूप में हो।

भारत में 40-42% लोगों की प्रथम भाषा हिन्दी है। इस क्षेत्र का संबंध उत्तर भारत में गंगा के मैदान से है। बिहार, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, हरियाणा तथा उत्तराखंड इस क्षेत्र में आते है।

इसके अतिरिक्त 30% लोग हिन्दी को दूसरी भाषा के रूप में प्रयोग करते है। इन क्षेत्रों में बंगाल, असम, ओडिशा, महाराष्ट्र आदि राज्य आते है।

हिन्दी भाषा का क्षेत्र केवल भारत तक ही सीमित नहीं है बल्कि नेपाल में 'नेपाली हिन्दी' तथा फिजी व मॉरीशस में गिरमिटिया ~~का~~ मजदूरों द्वारा भोजपुरी बोली का क्षेत्र भी सम्मिलित है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। →
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) सिद्ध साहित्य में प्रारंभिक खड़ी बोली का स्वरूप

सिद्ध परम्परा बौद्ध धर्म के वज्रयान सम्प्रदाय से संबंधित है। सिद्ध संतो द्वारा अपनी धार्मिक मान्यताओं के प्रसार के लिए जिस साहित्य की रचना की उसे सिद्ध साहित्य कहा जाता है।

सिद्ध साहित्य में आरंभिक खड़ी बोली का प्रयोग किया है। सिद्धों द्वारा वैदिक कर्मकाण्डों तथा ब्राह्मणवादी आडंबरों पर चोट करते हुये लिखा है -

"पंडिअ सअल सत्त बक्खाणअ,
देहहिं बुद्ध बसन्त ण जाणअ ॥"

उपर्युक्त उदाहरण में 'न' का 'ण' में परिवर्तन खड़ी बोली की प्रमुख विशेषता को दर्शाता है।

अपनी 'शून्य आधारित' साधना पद्धति के संदर्भ में भी सिद्ध साहित्य में व्यापक वर्णन मिलता है। सिद्धों द्वारा प्रयुक्त भाषा यह दर्शाती है कि किस प्रकार अपभ्रंश तथा अवहट्ट परम्परा से गुजरकर प्रारंभिक हिन्दी का विकास हुआ। उदाहरण के लिए -

"जहाँ मण पवण न संचरइ, रवि ससि णाह पवेस।
ताहि बढ़ बुद्ध विसाम करु, कहहि सरहे उएस।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

उपर्युक्त उदाहरण में निम्नलिखित विशेषताएँ खड़ी बोली को दर्शाती है-

(क) मन > मण (न > ण)

शशि > सासि (श > स)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

ा इस स्थान में प्रश्न
ा के अतिरिक्त कुछ
नखें।

ase do not write
hing except the
stion number in
space)

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।
(Please don't write
anything in this space)

2. (क) मध्यकाल में प्रयुक्त साहित्यिक ब्रजभाषा में निहित गंभीर कलात्मकता के कारणों का अन्वेषण कीजिये। 20

मध्यकाल में कारण भक्तिकाव्यधारा ने ब्रजभाषा को साहित्यिक भाषा के रूप में प्रयुक्त किया तथा देखते ही देखते ब्रजभाषा अखिल भारतीय साहित्यिक भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हो गई।

मध्यकाल में सूरदास के हाथों पड़कर ब्रजभाषा शृंगार की विशेषीकृत भाषा बन गई तथा गंभीर कलात्मकता से युक्त हुई। इसके प्रमुख कारण निम्नलिखित रहे -

(i) सूरदास ने कृष्णभक्ति से संबंधित एक लाख से अधिक पदों की रचना की। सूरदास ने ब्रजभाषा को न केवल शृंगारिकता से युक्त किया बल्कि वाग्विदग्धता से भी युक्त किया जो इसकी कलात्मकता का एक महत्वपूर्ण कारण है। उदाहरण के लिए -

" निर्गुण कौन देस को बासी।
मधुकर हँसि समुझाय, सौंह दे, बूझति साँचि।
को है जनक, जननी को कहिया, कौन नारि को दासि।"

(ii) मध्यकाल में सामन्तवादी प्रवृत्तियों के बढ़ने के कारण दरबार शृंगारिकता के केन्द्र बन गये तथा कवियों ने

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

भी श्रृंगार की कविताओं की रचना की, जो ब्रजभाषा में ही रची गई।

(iii) दरबारी लेखन ने कवियों को धनप्राप्ति के लिए आकर्षित किया। इसके लिए उन्होंने लेखन की सजगता पर बल दिया ताकि उपहारस्वरूप धन की प्राप्ति की जा सके। रीतिकाल में कवि बिहारीदास इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने ब्रजभाषा की समास क्षमता तथा भावों की समाहार क्षमता का अद्भुत मिश्रण किया। उदाहरण के लिए:-

" कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन में करत है, नैनन सू ही बात।"

(iv) ब्रजभाषा की मिठास तथा कठोरता का अभाव मध्यकाल में इसकी कलात्मकता के विकास में महत्त्वपूर्ण कारण है क्योंकि 'अवधी' केवल औदात्य रूपी भावों तक सीमित हो गई। परिणामस्वरूप ब्रजभाषा के प्रतिद्वंद्वी के रूप में कोई अन्य बोली नहीं खड़ी हो पाई।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'खड़ी बोली' बोली की भाषिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'खड़ी बोली' पश्चिमी हिन्दी उपभाषा की एक बोली है जो वर्तमान मानक हिन्दी का आधार है। इसकी भाषिक विशेषताएँ निम्नलिखित है -

(i) यह 'आकारान्त' बोली है। उदाहरण के लिए - घोड़ा, तारा, बस्ता आदि।

(ii)

खड़ी बोली पश्चिमी हिन्दी उपभाषा की एक बोली है, जो वर्तमान हिन्दी का आधार है।

विशेषताएँ -

(i) यह 'आकारान्त' है। उदाहरण -

घोड़ा, तारा, बस्ता।

(ii) 'ड़' का ड तथा 'न' का 'ण' इसकी एक विशेष प्रवृत्ति है।

बड़ा → बड्डा

(iii) एकवचन से बहुवचन बनाने के लिए अ एवं ईकारान्त शब्दों में 'याँ' तथा अकारान्त में ए का प्रयोग किया जाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

नदी > नदियाँ

तारा > तारे

(iv) लिंग व्यवस्था

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'दक्खिनी हिंदी' के प्रयोग-क्षेत्र बतलाते हुए 'दक्खिनी हिंदी' की भाषागत विशेषताओं का उद्घाटन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मोहम्मद बिन तुगलक द्वारा राजधानी परिवर्तन के कारण हिन्दी भाषी लोगो का दक्षिणी क्षेत्र में जाने से भाषाई संक्रमण तीव्र गति से हुआ। परिणाम स्वरूप मराठी, तेलुगु तथा कन्नड भाषाओं से हिंदी का परिचय हुआ।

इस भाषायी संक्रमण के कारण एक नई बोली दक्खिनी का विकास हुआ जो व्याकरणिक ढांचे पर खडी बोली की भांति, बाहरी कलेवर (लिपि) में फारसी तथा प्रकृति में सामासिक थी।

दक्खिनी हिन्दी का प्रयोग मुख्यत: कर्नाटक के उत्तरी क्षेत्रों ~~तथा~~ जैसे बीजापुर, गोलकुण्डा आदि में किया जाता है। दक्खिनी हिन्दी अपने कलेवर में खडीबोली की विशेषताओं को धारण करती है। जैसे -

"जिसे इश्क का तीर कारी लगे,
उसे क्यों न जिन्दगी भारी लगे।"

दक्खिनी हिन्दी की भाषागत विशेषताएँ:-

(i) इसके सभी वर्ण खड़ी बोली हिन्दी के समान ही है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ii) खड़ी बोली की ~~भांति~~ भांति 'ड़' का 'ड' इसकी एक प्रमुख विशेषता है -

बड़ा > बडा

(iii) खड़ीबोली की भांति महाप्राण वर्णो का अल्पप्राणीकरण ~~~~ की प्रवृत्ति दिखाई पडती है -

हाथ > हात

भूख > भूक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) प्रारंभिक हिंदी की व्याकरणिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संस्कृत से हिन्दी के विकास की प्रक्रिया में अपभ्रंश, अवहट्ट तथा प्रारंभिक हिन्दी प्रमुख चरण है।

प्रारंभिक हिन्दी की व्याकरणिक विशेषताएँ :-

(i) संज्ञा व कारक व्यवस्था :-

→ अपभ्रंश से प्रारंभ हुआ विभक्ति प्रयोग यहाँ प्रायः नहीं दिखाई देता किन्तु थोड़ी मात्रा में विभक्ति प्रयोग मिलता है

→ सभी प्रातिपादिक स्वतंत्र हो गये तथा धीरे-धीरे अकारान्त होने की प्रवृत्ति का विकास हुआ।

→ प्रारंभिक हिन्दी में स्वतंत्र परसर्गों का प्रयोग किया जाने लगा।

कर्ता - ने, नै	सम्प्रदान - कहि, लागि
कर्म - को	संबंध - का, के, की, कर
करण - से, सउँ	

(ii) अपभ्रंश में ही नपुंसकलिंग का विलोप हो गया था, जो प्रारंभिक हिन्दी में भी दिखाई देता है। अधिकांश नपुंसक लिंग शब्द पुल्लिंग में सम्मिलित हो गये।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

प्रारंभिक हिन्दी में भी दो ही वचन का उपयोग किया जाता था। संस्कृत के सभी द्विवचन स्वाभाविक रूप से बहुवचन में सम्मिलित हो गये। एकवचन से बहुवचन बनाने के लिए 'न्हि' का प्रयोग किया जाने लगा।

पुहुप > पुहुपन्हि

(iv) विशेषण :- प्रारंभिक हिन्दी में अनेक विशेषण शब्दों का विकास हुआ। प्रमुख रूप से संख्यावाचक विशेषण की दृष्टि से यह महत्वपूर्ण है। नौ, दस, बारह आदि प्रमुख संख्यावाचक विशेषणों का विकास हुआ।

(v) काल → भूतकाल के लिए हिन्दी के कृदन्त रूप का प्रयोग किया गया। वर्तमान काल संस्कृत की परम्परा के अनुसार चलता रहा।

(vi) क्रिया :- प्रारंभिक हिन्दी में क्रिया के 'त' रूप तथा 'ब' रूप का विकास हुआ। जो वर्तमान में पूर्वी हिन्दी तथा बिहारी हिन्दी में दिखाई देती है।

'त' → चलत, देखत

'ब' → खाइब, चलब

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (viii)
Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सर्वनाम - प्रारंभिक हिन्दी की महत्वपूर्ण उपलब्धि इस काल में विभिन्न सर्वनामों का विकास है, जो वर्तमान हिन्दी की विभिन्न बोलियों में दिखाई देती है।

प्रथम पुरुष - मैं, मोहि

मध्यम पुरुष - तुम, तुहार, हमार

अन्य पुरुष - ओकर

निष्कर्ष: कहा जा सकता है कि प्रारंभिक हिन्दी आधुनिक हिन्दी के विकास में एक महत्वपूर्ण पड़ाव है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) मध्यकाल में काव्यभाषा के रूप में अवधी के विकास पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मध्यकाल में काव्यभाषा के रूप में अवधी का विकास एक सुयोग से संबंधित है। इस काल में सूफी काव्यधारा तथा रामभक्ति काव्यधारा के रूप में अवधी का साहित्यिक विकास हुआ।

वस्तुतः संस्कृत परम्परा पर आधारित प्रेम काव्यों की रचना भारतीय लोकभाषाओं में होती रही है। सूफी प्रेमाश्रयी संतो द्वारा अपनी रहस्यवादी सिद्धान्तों की अभिव्यक्ति अवधी के रूप में की गई। परिणामस्वरूप सूफी संतो ने भारतीय लोकजीवन की कथाओं को आधार बनाया।

पूर्णतः अवधी में रचित प्रथम ग्रंथ मुल्ला दाउद का 'चन्दायन' अथवा 'लोरिकहा' है। इसमें मुल्ला दाउद ने माधुर्य गुण का समावेश किया है। इसी प्रकार कुतुबन का 'मृगावती' भी अवधी में रचित ग्रंथ है।

अवधी में सर्वाधिक समृद्ध परम्परा मलिक मोहम्मद जायसी की है। उनके

दृष्टि The Vision

या इस स्थान में प्रश्न
या के अतिरिक्त कुछ
लिखें।
ease do not write
thing except the
stion number in
space)

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।
(Please don't write
anything in this space)

द्वारा रचित 'पद्मावत' इसका प्रमाण है। उनके रचनाकर्म में ठेठपन, देसीपन को खोये बिना व मधुरता से युक्त अवधी का प्रयोग हुआ है।

उन्होंने देसी जीवन को प्रस्तुत करने के लिए स्थानीय लोकोक्ति तथा मुहावरों का प्रयोग किया। जैसे -

→ "सूधी अंगुरी निकसै नहीं घिऊ।"

→ "हिय फटा।"

इसके अलावा उन्होंने स्थानीय शब्दों जैसे 'दबंगरा' तथा 'मदवट' का प्रयोग किया। उनकी भाषा के माधुर्य को देखकर शुक्ल जी को भी कहना पड़ा कि - जायसी की भाषा का माधुर्य निराला है।

रामभक्ति काव्यधारा में अवधी के साहित्यिक विकास की बागडोर तुलसीदास ने संभाली। उन्होंने ठेठ अवधी के स्थान पर तत्सम शब्दावली से युक्त अवधी का विकास किया। तत्सम शब्दावली को ज्यों का त्यों प्रयोग करने की बजाय उन्होंने उनका अवधी रूप प्रयुक्त किया। जैसे -

हंसगामिनी → हंसगवनी

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अमृत > अमिय

वन > बन

तुलसीदास जी ने संस्कृत शब्दावली का प्रयोग कर अवधी को समृद्ध किया। उनकी शब्दावली का एक उदाहरण द्रष्टव्य है-

'लोचनु जल रहे लोचन कोना, परम कृपन कर सोना'

इस प्रकार स्पष्ट है कि मध्यकाल में सूफी काव्यधारा के ठेठपन तथा रामभक्ति काव्यधारा के तत्समीपन ने अवधी की साहित्यिक परम्परा को समृद्ध किया।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: $10 \times 5 = 50$

(क) रामस्वरूप चतुर्वेदी के साहित्येतिहास-लेखन की विशेषताएँ

आचार्य रामस्वरूप चतुर्वेदी ने शुक्ल जी तथा द्विवेदी जी के पश्चात् साहित्य इतिहास लेखन का कार्य किया इसलिए उनके साहित्य इतिहास लेखन पर इनका प्रभाव दिखाई पड़ता है। वस्तुतः रामस्वरूप चतुर्वेदी ने 'हिन्दी साहित्य एवं संवेदना का विकास' नाम से अपना साहित्य इतिहास लेखन किया।

'साहित्य', 'संवेदना' तथा 'विकास' ये तीनों शब्द चतुर्वेदी जी की विचारधारा को दर्शाते है जहाँ साहित्य का संवेदना से जुड़ाव उन्हे शुक्ल जी की विधेयवादी परम्परा से जोड़ता है, तो वही 'विकास' उन्हे द्विवेदी जी की परम्परावादी वि दृष्टिकोण के निकट लाता है।

रामस्वरूप चतुर्वेदी के साहित्य इतिहास लेखन की सबसे प्रमुख विशेषता लेखन शैली तथा भाषा पर उनकी पकड़ है। इसी आधार पर वे उर्दू शायरी की जीवन्तता ~~तथा देहें की~~ भी स्पष्ट करते है। वे कहते है-

"लिखने की सजगता दोहो के सौंदर्य तथा लाक्षणिकता

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

को बढ़ाती है किन्तु कहने की सहजता शायरी की जीवन्तता को बढ़ाती है।"

विभिन्न कालों की प्रकृति पर विशेष पकड़ होने के कारण वे गद्य तथा पद्य में विद्यमान सूक्ष्म विभेदों को भी पहचान पाते हैं, जो उन्हें अन्य साहित्य इतिहास लेखकों से अलग करता है।

साहित्य इतिहास लेखन के माध्यम से उन्होंने भक्ति तथा श्रृंगार के काव्य के मध्य चली आ रही एक लंबी लड़ाई को भी समाप्त किया जो संस्कृत परम्परा में जयदेव के 'गीत गोविन्द' तथा हिन्दी में विद्यापति की 'पदावली' के संदर्भ में है। वे लिखते हैं कि -

"ईश्वर मानव से अधिक क्षमताएँ रखता है, अतः श्रृंगार में भी वह मानव से अधिक मानव हो सकता है।"

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि चतुर्वेदी जी के साहित्य इतिहास लेखन में शुक्ल की प्रगतिवादी तथा द्विवेदी की परम्परावादी विचारधारा परस्पर हाथ पकड़े नजर आती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) मनोवैज्ञानिक कहानी का परिचय

प्रेमचन्द ने हिन्दी कहानी को एक झटके में शून्य से शिखर तक पहुँचाया तथा कहानी लेखन में सामाजिक यथार्थ को प्रस्तुत किया। प्रेमचन्द युग के पश्चात् जैनेन्द्र, इलाचन्द्र जोशी तथा अज्ञेय ने सामाजिक यथार्थ के स्थान पर मानसिक यथार्थ को केन्द्र में रखा। इसी से हिन्दी में मनोवैज्ञानिक कहानी लेखन की शुरुआत हुई।

मनोवैज्ञानिक कहानीकारों का प्रमुख उद्देश्य मानसिक अन्तर्संघर्ष को प्रकट करना था। पश्चिमी मनोविश्लेषणवादी विचारधारा के प्रभाव के कारण आंतरिक जीवन की घटनाओं का वर्णन इन कहानियों की प्रमुख विशेषता है।

आंतरिक जीवन से संबंधित होने के कारण ये कहानियाँ वर्णनात्मक न होकर विचारात्मक होती है। अभिधात्मकता के स्थान पर प्रतीकात्मकता का प्रयोग इनकी एक महत्वपूर्ण विशेषता है। जीवन की घटनाओं के वर्णन से बचते हुये किसी दृश्य विशेष को भी कहानी की विषय वस्तु

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का लेना इनकी एक प्रमुख विशेषता है।

भाषा में लाक्षणिकता तथा शहरी मध्यवर्ग से इनका संबंध इन्हे सहज साहित्य से भिन्न करता है परिणामस्वरूप इनकी पहुंच सीमित हो जाती है।

उदाहरण -

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) संतकाव्यधारा और सूफीकाव्यधारा की भिन्नताएँ

मध्यकाल को हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग कहा जाता है क्योंकि संतकाव्यधारा तथा सूफी काव्यधारा के रूप में दो समृद्ध परम्पराएँ विद्यमान थी।

संतकाव्यधारा तथा सूफीकाव्यधारा में भिन्नताएँ

	संतकाव्यधारा	सूफीकाव्यधारा
(i)	यह काव्यधारा सगुण तथा निर्गुण ईश्वर को केन्द्र में रखती है।	यह काव्यधारा केवल निर्गुण ईश्वर को केन्द्र में रखती है।
(ii)	इस काव्यधारा में साधनात्मक रहस्यवाद प्रमुख रूप से दिखाई देता है।	इस काव्यधारा में ~~रहस्यवाद~~
(iii)	इस काव्यधारा के संतो ने अपनी भक्ति के लिए काव्य की रचना की न कि ~~काव्य~~ साहित्य के लिए।	(iii) इन्होंने सजग लेखन किया तथा अपने सिद्धांतों की अभिव्यक्ति के लिए काव्य की रचना की।
(iv)	इन्होंने 'पंचमेल खिचड़ी' अर्थात् सधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग किया।	(iv) इन्होंने अवधी के माधुर्य को अपने काव्य का हिस्सा बनाया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) आंचलिक कहानी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आंचलिक कहानी से आशय किसी अंचल को कहानी का पात्र बना दिये जाने से है, जहाँ कहानी उस अंचल की विशेषताओं को प्रकट करती है।

वस्तुतः आंचलिक उपन्यास की भाँति आंचलिक कहानी विधा में भी किसी अंचल की विशेषताओं को प्रकट करना प्रमुख होता है। अर्थात 'अंचल' नायकत्व धारण करता है।

आंचलिक कहानी की विषयवस्तु किसी अंचल की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा भौगोलिक विशेषताओं को धारण करती है।

लेखक आंचलिक कहानी के आरंभ में सामान्यतः पाठक के मन में अंचल का बिम्ब बनाने का प्रयास करता है ताकि पाठक स्वयं को अंचल का हिस्सा बना सके। इसके लिए वह भौगोलिक विशेषताओं के वर्णन द्वारा पाठक को अंचल में प्रवेश कराता है।

तत्पश्चात, वह अंचल की सामाजिक- सांस्कृतिक, आर्थिक आदि गतिविधियों का वर्णन करता है। इन

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

सब में मानवीय नायक भी उपस्थित हो सकते है किन्तु वे केवल अंचल की विशेषताओं को प्रकट करने के संदर्भ में।

हिन्दी में 'मैला आँचल' के पश्चात् आंचलिक उपन्यास तथा कहानी लेखन का कार्य प्रारंभ हुआ। वर्तमान में 'बुन्देलखंड', हिमालय आदि * अंचलों का नायक बनाकर कहानी लेखन का कार्य किया जा रहा है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'अंधेर नगरी' नाटक की उन विशेषताओं का उद्घाटन कीजिये जिनके कारण यह नाटक हिंदी रंगमंच के सर्वाधिक सफल नाटकों में से एक रहा है। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'अंधेर नगरी' नाटक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा रचित एक नाटक है, जो अपने समय की समस्याओं को प्रकट करने की दृष्टि से युक्त होने के साथ वर्तमान समय में भी प्रासंगिक है।

'अंधेर नगरी' नाटक हिन्दी रंगमंच के सर्वाधिक सफल नाटकों में प्रमुख है। इसकी सफलता के इनकी विशिष्ट विशेषताएँ है, जो निम्नलिखित है -

→ इसमें उठाई गई समस्याएँ इसके रचनाकाल से वर्तमानकाल तक विद्यमान है। इसमें राज्य का विकृत स्वरूप किस प्रकार कल्याणकारी राज्य की अवधारणा का क्षरण करता है वह दर्शाया गया है -

" पूरन पुलिसवाले जो खाते, सब कानून हजम कर जाते।"

→ धन की महत्ता का बढ़ना तथा धन के लिए कुछ भी करना उस समय की ही नहीं बल्कि वर्तमान की भी एक प्रमुख समस्या है। भारतेन्दु ने एक प्रसंग में कहलवाया है कि रुपये के लिए ब्राह्मण अपनी जाति छोड़ने को तैयार है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

इसके अतिरिक्त तत्कालीन समय में जिस प्रकार ब्रिटिश राज भारतीयो का शोषण कर रहा था उसी प्रकार वर्तमान में भी भ्रष्ट राजनीति उसी के अनुरूप कार्य कर रही है।

→ 'अंधेर नगरी' नाटक की सर्वप्रमुख विशेषता जो रंगमंच पर इसकी सफलता का कारण है, वह इसका मंचन की आसानी है। भारतेन्दु ने बहुत ही कम दृश्यों के साथ इसके मंचन की व्यवस्था की है जिसके कारण कम लागत लगती है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि ~~उसकी~~ 'अंधेर नगरी' नाटक 19वीं सदी की समस्याओं को समेटता हुआ वर्तमान तक प्रासंगिक है जो इसकी सफलता का कारण है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी साहित्येतिहास-लेखन-परंपरा में 'शिवसिंह सरोज' की सीमाओं एवं महत्त्व पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी साहित्य इतिहास लेखन के शुक्लपूर्व युग में 'शिवसिंह सरोज' एक महत्त्वपूर्ण प्रयास है। हिन्दी साहित्य इतिहास लेखन के आरंभिक प्रयासों में से एक होने के कारण इसका संदर्भ अनेक लेखकों द्वारा दिया गया।

महत्त्व :-

अनौपचारिक लेखन के बावजूद 'शिवसिंह सरोज' भक्तमाल की परम्परा को आगे बढ़ाते हुये अनेक कवियों तथा उनकी कृतियों के बारे में जानकारी उपलब्ध कराता है। गार्सा द तासी तथा बाद के इतिहास लेखकों ने इसका प्रयोग संदर्भ के रूप में किया। मध्यकालीन कवियों के जन्मस्थान, उनकी कृतियों के बारे में विस्तृत जानकारी 'शिवसिंह सरोज' के माध्यम से उपलब्ध होती है।

सीमायें :-

→ 'शिवसिंह सरोज' साहित्य इतिहास लेखन का एक अनौपचारिक प्रयास होने के कारण इसमें कवियों

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

की कृति की बजाय जीवनी का अधिक वर्णन किया गया है।

कवियों के काल के संबंध में किसी भी प्रामाणिकता का अभाव है।

इसमें वर्णित कुछ कृतियाँ वर्तमान तक अनुपलब्ध है, जो एक बड़ी सीमा है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि 'शिवसिंह सरोज' कई सीमाओं के बावजूद साहित्य इतिहास लेखन का एक आरंभिक सुदृढ़ प्रयास था।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) मोहन राकेश की कहानियों के विषय-वैविध्य का उद्घाटन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मोहन राकेश नई कहानी लेखन के अग्रणी है। अतः कहानियों के विषय-वैविध्य उनकी एक प्रमुख विशेषता है।

मोहन राकेश ने स्वतंत्रता पश्चात् शहरी जीवन की समस्याओं, नारी-पुरुष टकराव, अकेलेपन की पीड़ा झेलते लोगों आदि कई विषयों पर कहानी लेखन किया है। ~~इस संदर्भ में की~~

मोहन राकेश ने अस्तित्ववादी विचारधारा को आधार मानते हुये कहानी लेखन किया। जिसके अनुसार मनुष्य 'जो है' तथा 'जो होना चाहता है' के मध्य विषमता ही विसंगति को जन्म देती है। इसी विसंगतिबोध ने वर्तमान में शहरी जीवन की समस्याओं को बढ़ा दिया है।

नारी-पुरुष के मध्य वैचारिक मतभेद को भी राकेश ने अपनी कहानियों का हिस्सा बनाया है। 'एक और जिन्दगी' के नायक-नायिका किस प्रकार मतभेद के कारण मजबूरी में जिन्दगी जीने को मजबूर है। ~~मोहन~~ मोहन राकेश इस संदर्भ में कहते है कि -

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

"उनकी कहानियाँ अकेलेपन की यंत्रणाओं को झेलते लोगों की कहानियाँ हैं, जो आज के संदर्भ में आज के समय की है।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मोहन राकेश की कहानियों के विषय-वैविध्य की विशेषता ने उन्हें नई कहानी दौर का प्रमुख रचनाकार बनाया है। उनकी अस्तित्ववादी विचारधारा की अभिव्यक्ति उनकी कहानियों के साथ उपन्यास तथा नाटकों में भी होती है। 'आषाढ़ का एक दिन', आधे-अधूरे, लहरों के राजहंस उनके प्रमुख नाटक है।

राकेश की कहानियों की एक विशेषता उनमें नायकत्व तथा खलनायकत्व का आपस में मिश्रित हो जाना है।

सारांशतः कहा जा सकता है कि मोहन राकेश ने 'नई कहानी' दौर के सभी विषयों पर लेखन किया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation